

પરખ સચ કી

# જાંસંદેશ ટાઇમ્સ

ગારાણસી, લખનऊ, કાનપુર, ગોરક્ષણપુર એવં પ્રયાગરાજ સે પ્રકાશિત



E-paper : [www.jansandeshtimes.net](http://www.jansandeshtimes.net) | Portal : [www.jansandeshtimes.news](http://www.jansandeshtimes.news)

પ્રેમ ઔર સૌહાર્દ કી ભાવનાઓ કો  
વિવિધ રંગો મે અભિવ્યક્ત કરને વાલે

## મહાપર્વ હોળો



કી આપ સભી એવં આપકે પરિવાર કો

## બધાઈ એવં શુભકામનાએં



## યોગોદ્વર સિંહ

સમાજસેવક  
લોકસભા ક્ષેત્ર : સલેમપુર (૭૧)



ઢાક/નગર સંકરણ



# જાંસંદેશ ટાઇમ્સ

ગારણસી, લખનऊ, કાનપુર, ગોરક્ષધુર એવં પ્રયાગરાજ સે પ્રકાશિત

દાન/નગર સંકરણ

E-paper : [www.jansandeshtimes.net](http://www.jansandeshtimes.net) | Portal : [www.jansandeshtimes.news](http://www.jansandeshtimes.news)

## ગો-તરસ્કરી સે જુડે કિસી ભી વ્યક્તિ કો નહીં બટ્ટોંગે

સીએમ યોગી ને ગો-તરસ્કરી પર પ્રભાવી અંકુશ લગાને કો દિયા કર્દા નિર્દેશ

### ગારણસી મેં બૈઠક

ધાર્મિક સ્થળોને પર લગે લાઉન્ડસ્પીકર કી આવાજ પર રોક લગાને કી દી હિદાયત









# उत्सवप्रियता: नवोन्मेष का आवाहन



प्रसंगवश

गिरीश्वर मिश्र

शिशिर के बाद फागुन और चैत के आरे साथ वसंत ऋतु की दस्तक होती है। वसंत में प्रकृति अपने सौंदर्य का सारा सचित खजाना लुटाने के लिए व्यग्र होती है। उसके अपने दूत बने पवी गा गर, वृक्ष और पादप नए पुष्ट और पल्लव के साथ संज-धज कर बड़ी मुस्तैदी से इस व्यग्रता का डंका बजाते चलते हैं। फागुन की भासीती बरामदी के भी चित्त को उन्मयित किया बैठैर नहीं छोड़ते वह सब एक क्रम में काल-चक्र की निश्चित गति में आवेजित होता है। प्रकृति ननी नया परिधान धारण करती है। खेतों और बाग-बगीचों में रोंगे से अद्भुत चित्रकारी चलती रहती है। पीली सरसों, तोसी के नीले फूल, आम की मंजरी, कोयल की मधुर कुक्क के बीच प्रकृति एक रमणीय सुंदर चित्र की तरह सज उत्तरे है। किंवित की प्रीती ही पाती है। पारस्परिकता के एक संरक्षित में ये विविधता भरा बलाल एक नया, अनेकों, आकर्षक और उत्पादन्तर्धक परिवहन रख देता है। नया स्मृणीय होता है। इसलिए मानव चित्त के बड़ा प्रिय लगत है। नए अनुभव के लिए मन में उत्सुकता और उत्तराधिकार के रूप में अधिकृत होती है। यह पारस्परिकता भारीत्य समाज में उत्सवप्रियता के रूप में अधिकृत होती है जो उत्तराधिकार बनती है।

जब कालिदास ने उत्सवप्रिया: मानवा: कह कर उत्सवधर्मिता को मनुष्यता का लक्षण घोषित किया था तो उनके ध्यान में हाली जैसे मदनावस ही रहे होंगे जिनमें लोग अपनी भिन्नता से ऊपर उठ कर साझे की अस्मिता रचते हैं। अंहंकार की सीमाओं को तोड़ एक अतिक्रमी

पहचान बानाने का यह उत्सव जिंदगी में नीरसता के विरुद्ध रस की लीलाकाल है। ऊपरी भैरों में डुकों कर सब की अपने जैसा बनने और देखने का उद्योग आपसी सौंदर्य की धौमी की भी जगता है। यह दुखद है कि आज अस्मिताओं की धौर लडाई चल रही है। बड़ी अस्मिता को अंहंकार करना, साँझदारी और सहयोग का मार्ग प्रशस्त करता है। आज की अधुनिक जीवन-शैली में हम अपने अनोखेपन और दूसरों से अलग पहचान पर बढ़ा जोर है। सबकी चाह है कि वस्त्र, भौजन और आभूषण सब कुछ 'कर्स्टमाइंड' और 'डेंजाराम' होना चाहिए। अलग लगाने और दिखने की अदय्य चाहत से फिजूली, ऊब और थकान ही बढ़ रही है। सबसे अलग होने के मामूल में फैशन की दुनिया में नियन नए प्रयोग हो रहे हैं जिसके चलते व्यक्ति का अहसास भी बढ़ता जा रहा है। परंतु सब यही है कि जन्म के समय मनुष्य के रूप में जैविक शारीरिक आकार प्रकार में व्यापक समानातां में रहते हुए हम अलग नाम, काम और धार्म के बीच अपने मालिक समानातां से दूरी बढ़ाते जाते हैं। परंतु सब यही है कि हम सिर्फ़ एक दूसरे से भिन्न ही नहीं हैं हम सबमें व्यापक समानातां भी हैं।

(लेखक वर्धा विश्वविद्यालय में कुलपति रहे हैं)

**(यह नजीर बनारसी ही हैं जो बताते हैं कि होली में शिकार भी शिकारी हो गए हैं: ह्या में ढूबने वाले भी आज उभरते हैं/हरीन शोखियां करते हुए गुजरते हैं/जो चोट से कभी बचते थे चोट करते हैं/हरीन भी खेल रहे हैं शिकार होली में। अन्यथा इन हालात में हुड़दांग की उमंग ही पैदा नहीं होती। बकौल अर्श मलसियानी: इक तरफ राहत का और फरहत का काल/इक तरफ होली में उड़ता है गुलाल/इक तरफ यारों की इश्वरत-कोशियां/इक तरफ हम और हाल-ए-पुर-मलाल/इक तरफ दौर-ए-शराब-आतिशी/इक तरफ तलछट का मिलना भी मुहाल/देखते हैं तुझको जब उठती है हूक/आह ऐ हिन्दोस्तां ऐ खस्ता-हाल/रहम के काबिल ये बबार्दी तिरी/दीद के काबिल**

**ये तेरा है जावाल/किस कदर खूं-रेज है कितना कबीही/तेरी मस्जिद और मंदिर का सवाल/उफ तिरे बेटों की रज्म-आराइयां/आह उनके बाहमी जंग-ओ-जिदाल/अपने फरजांदों के ये अतवार देख/देख ये लान्त के काबिल चाल-ढाल/किस कदर जिल्लत के दिल-दादा हैं ये/बे-कमाली में हैं कितने बा-कमाल/सीना-ए-उत्सवप्रियता: नवोन्मेष का इश्वरांल/दामन-ए-अख्लाक पर धब्बा है एक/इनकी वहशत-खेजियों का इतिसाल।)**

## वो बोलियां और थी...वो होलियां और थी !



रंग-तरंग

कृष्ण प्रताप सिंह

बुराउ आज न ऐसे रहे न वैसे रहे/हस्पाई दिल में रहे आज चाहे जैसे रहे/गुवार दिल में किसी के रहे तो कैसे रहे/अंवार उड़ती है बनकर गुवार होली में/मिलो गले से गले बर-बर होली मेंहुँ।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजनम', 'जवाहर से लाल तक' और 'गुलामी से आजादी तक') करते हुए होली की बाबत उन्हें और भी

प्रणाम कर द्वाक तक जाएंगे और आपने बासीतों को उत्सव कर दिया जाएगा।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजनम', 'जवाहर से लाल तक' और 'गुलामी से आजादी तक') करते हुए होली की बाबत उन्हें और भी

बहुत कुछ लिखा है।

मसलन: अगर आज भी होली-ठोली न होगी/तो होली ठिकाने की होली न होगी/बड़ी गालियों से गले बर-बर होली मेंहुँ।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजनम', 'जवाहर से लाल तक' और 'गुलामी से आजादी तक') करते हुए होली की बाबत उन्हें और भी

प्रणाम कर द्वाक तक जाएंगे और आपने बासीतों को उत्सव कर दिया जाएगा।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजनम', 'जवाहर से लाल तक' और 'गुलामी से आजादी तक') करते हुए होली की बाबत उन्हें और भी

बहुत कुछ लिखा है।

मसलन: अगर आज भी होली-ठोली न होगी/तो होली ठिकाने की होली न होगी/बड़ी गालियों से गले बर-बर होली मेंहुँ।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजनम', 'जवाहर से लाल तक' और 'गुलामी से आजादी तक') करते हुए होली की बाबत उन्हें और भी

प्रणाम कर द्वाक तक जाएंगे और आपने बासीतों को उत्सव कर दिया जाएगा।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजनम', 'जवाहर से लाल तक' और 'गुलामी से आजादी तक') करते हुए होली की बाबत उन्हें और भी

बहुत कुछ लिखा है।

मसलन: अगर आज भी होली-ठोली न होगी/तो होली ठिकाने की होली न होगी/बड़ी गालियों से गले बर-बर होली मेंहुँ।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजनम', 'जवाहर से लाल तक' और 'गुलामी से आजादी तक') करते हुए होली की बाबत उन्हें और भी

बहुत कुछ लिखा है।

मसलन: अगर आज भी होली-ठोली न होगी/तो होली ठिकाने की होली न होगी/बड़ी गालियों से गले बर-बर होली मेंहुँ।

समझ गए होंगे आप, अपनी आधिरी सांस क तक मोहब्बत, भाईचारे और देशप्रेम के प्रति समर्पित रहे शायर मरहम नजीर बनारसी (25 नवंबर, 1909-23 मार्च, 1996) की पर्कियां हैं ये:

'राष्ट्र' की अमानत राष्ट्र के हालाने' (दरअसल, यह नजीर बनारसी की एक कृति का नाम है। वैसे ही जैसे: 'पांगोजन















